==========

AVYAKT MURLI

16 / 04 / 77

==========

16-04-77 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

ब्राह्मण जन्म की दिव्यता और अलौकिकता

मर्यादा पुरूषोत्तम, बाप समान बनन वाल, सदा सिरताज, सदा बाप क सर्व प्राप्तियों क सहार में रहन वाल बच्चों प्रति उच्चार हुए बाबा क महावाक्य :-

सुनना और समाना। 'सुनना' सहज लगता है रूचि होती है सुनत ही रहें। यह इच्छा सदैव रहती है। ऐस ही समाना भी इतना ही सहज अनुभव होता है। सदा इच्छा रहती है कि समान स बाप समान बनना है। समान का स्वरूप है बाप समान बनना। तो अभी तक फर्स्ट स्टज पर हो, सक्ण्ड स्टज पर हो वा लास्ट स्टज तक हो? लास्ट स्टज है सुनना और बनना। सुन रह हैं, बन ही जायेंग, बनना ही है। कल्प पहल भी बन थ, अब भी अवश्य बनेंग, यह बोल लास्ट स्टज में समाप्त हो जात हैं। एक- एक बोल जैस जैस सुनत जा रह हैं, वैस वैस बनत जा रह हैं। लास्ट स्टज वालों का लक्ष्य और बोल, स्वरूप द्वारा स्पष्ट दिखाई दगा। जैस पहला पाठ आत्मा का सुनत हो और सुनात हो। लास्ट स्टज वाली आत्मा सिर्फ शब्द सुनेंगी, सुनावेंगी नहीं। लकिन साथ-साथ स्वरूप में स्थित होगी। इसको कहत हैं

बाप समान बनना। स्वयं का वा बाप का स्वरूप व गुण वा कर्त्तव्य, सिर्फ सुनायेंग नहीं लेकिन हर गुण और कर्त्तव्य अपन स्वरूप द्वारा अनुभव करायेंग। जैस बाप अनुभवी मूर्त है, सिर्फ सुनान वाल नहीं हैं। तो ऐस फॉलो फादर करना है। जैस साकार में बाप को देखा, सुनान क साथ कर्म में, स्वरूप में करक दिखाया। सुनना, सुनाना और स्वरूप बन दिखाना - तीनों ही साथसाथ चला। ऐस सुनना और सुनाना और दिखाना साथ-साथ है? अभी तक जितना सुना है उतना ही समाया है। विश्व क आग कर दिखलाया है! महान् अन्तर है वा थोड़ा सा अन्तर है? रिजल्ट क्या है? सुनना और सुनाना तो कामन (Common;साधारण) बात है। ब्राह्मणों की अलौकिकता कहाँ तक दिखाई देती है? जैस बाप क महावाक्य हैं कि 'मेरा जन्म और कर्म प्राकृत मनुष्यों सदृश्य नहीं, लेकिन दिव्य और अलौकिक है।' बाप-दादा क साथ-साथ आप ब्राह्मणों का जन्म भी साधारण नहीं, दिव्य और अलौकिक है। जैसा जन्म, जैसा दिव्य नाम वैसा ही दिव्य अलौकिक काम है।

जैस हरेक लौकिक कुल की मर्यादा की भी लकीर होती है। ऐस ब्राह्मण कुल की मर्यादाओं की लकीर क अन्दर रहत है? मर्यादाओं की लकीर, संकल्प में भी किसी आकर्षण वश उल्लंघन तो नहीं करत हैं। अर्थात् लकीर स बाहर तो नहीं जात हैं। शूद्रपन क स्वभाव वा संस्कार की स्मृति आना अर्थात् अछूत बनना। अर्थात् ब्राह्मण परिवार स अपन आप ही अपन को किनार करना। तो यह चैक करो कि सार दिन में बाप का सहारा

कितना समाय रहता और अपन□आप किनारा कितना समय किया? बारबार किनारा करन□वाल□बाप क□ सहार□का अनुभव, बाप क□ साथ-साथ रहन□का अनुभव, बाप द्वारा प्राप्त हुए सर्व खज़ानों का अनुभव, चाहत□हुए भी नहीं कर पात□हैं। सागर क□ किनार□पर रहत□सिर्फ दे□खत□ही रह जात□हैं, पा नहीं सकत□। पाना है, यह इच्छा बनी रहती है ल□किन 'पा लिया है', यह अनुभव नहीं कर पात□हैं। जिज्ञासा ही रह जात□हैं। 'अधिकारी' नहीं बन पात□हैं। तो सार□दिन में 'जिज्ञासु' की स्ट□ज कितना समय रहती है और 'अधिकारी' की स्ट□ज कितना समय रहती है? आप लोग क□ पास भी जब कोई नया आता है तो उसको पहल□'जिज्ञासु' बनात□हो। जिज्ञासु अर्थात् जिज्ञासा रह□कि पाना है। आप लोग भी 'जिज्ञासु' को किनार□रखत□हो। संगठन में या रैगुलर क्लास में आन□नहीं द□□□हो। जब वह कहता है कि अब अनुभव हुआ, निश्चय हुआ वा मान लिया, जान लिया, तब संगठन में आन□की परमीशन (Permission;अनुमति) द□□□हो। तो अपन□आप स□पूछो कि जब जिज्ञासु की स्ट□ज रहती है तो बाप का सहारा वा कुल का सहारा अर्थात् संगठन का सहारा स्वत: ही समीप क□ बजाए, अपन□को दूर-दूर वाला अनुभव नहीं करत□। सहार□क□ बजाय□स्वत: बुद्धि द्वारा किनारा नहीं हो जाता? बच्च□क□ बजाय मांगन□वाल□भक्त नहीं बन जात□। शक्ति दो, मदद करो, माया को भगाओ, युक्ति दो, माया स□छुड़ाओ, यह 'ब्राह्मणपन' क□ संस्कार नहीं हैं। ब्राह्मण कब पुकारत□नहीं। ब्राह्मणों को स्वयं बाप भिन्न-भिन्न 'श्रेष्ठ टाईटल' स□पुकारत□हैं। जानत□हो ना? आपक□ कितन□टाईटल

हैं? ब्राह्मण अर्थात् पुकारना बन्द। ब्राह्मण अर्थात् सिरताज। कभी भी प्रकृति का वा माया का मोहताज नहीं। तो ऐसा सिरताज बनो हो? माया आ जाती है अर्थात् मोहताज बनना। पुरान संस्कार वश हो जात हैं, स्वभाव वश हो जात हैं, यह है मोहताज पन। ऐसा मोहताज बाप का सिरताज नहीं बन सकता। विश्व का राज्य का ताजधारी नहीं बन सकता, बाप का सिरताज बनन वाल स्वप्न में भी मोहताज नहीं बन सकत। समझा, रियलाइज करो। अब सल्फ रियलाईजशन कोर्स (Self-Realization Course) चल रहा है ना। अच्छा।

सदा अपन ब्राह्मण कुल की मर्यादा का लकीर का अन्दर रहन वाल 'मर्यादा पुरूषोत्तम', सुनन सुनान और समान बनन वाल अभी-अभी स्वरूप स दिखान वाल सदा सिरताज, सदा बाप का सर्व प्राप्तियों का सहार में रहन वाल श्रेष्ठ आत्माओं को बाप-दादा का याद-प्यार और नमस्त।

दीदी जी स

जाना और आना कहेंग? जाना और आना तब कहें जब साथ छोड़ कर जाता? कहाँ स भी जाना होता है, जाना अर्थात् कुछ छोड़ कर जाना। लकिन यहाँ जाना और आना शब्द कह सकत हैं? यहाँ हैं तो भी साथ हैं, वहाँ हैं तो साथ हैं। जो सदा साथ रहता, स्थान में भी और स्थिति में भी, तो उसका लिए जाना नहीं कहेंग। जैस मधुबन में भी एक कमर स दूसर कमर में जाओ तो यह नहीं कहेंग हम जा रह हैं, छुट्टी लेवें, नहीं। नैचुरल जाना

आना चलता रहता है, क्योंकि साथ-साथ है ना। यह भी एक कमरे से दूसरे कमरे में चक्कर लगाते हैं। हैं मधुबन वासी। इसलिए विदाई शब्द भी नहीं कहते। सदा सेवा की बधाई देते हैं। सदा साथ रहते, सदा साथ चलते, अंग-संग हैं। ऐसे ही अनुभव होता है ना? महारथी अर्थात् बाप समान।

महारथियों के हर कदम में पद्मों की कमाई तो कामन बात है, लेकिन हर कदम में अनेक आत्माओं को पद्मापति बनाने का वरदान भरा हुआ है। महारथी कहेंगे हम जाते हैं? नहीं, लेकिन साथ जाते हैं। महारथियों की सर्विस, नैनों द्वारा बाप से प्राप्त हुए वरदान अनेकों को प्राप्ति कराना अर्थात् अपने द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करना है। आप को देखते-देखते बाप की स्मृति स्वत: आ जाए। हरेक के दिल से निकले कि कमाल है बनाने वाले की! तो बाप प्रत्यक्ष हो जाएगा। बाप, आप द्वारा प्रत्यक्ष दिखाई देगा और आप गुप्त हो, जायेंगे। अभी आप प्रत्यक्ष हो, बाप गुप्त है, फिर हरेक दिल से बाप की प्रत्यक्षता के गुणगान् करते हुए सुनेंगे। आप दिखाई नहीं देंगे, लेकिन जहाँ भी देखेंगे तो बाप दिखाई देगा। इसी कारण जहाँ भी देखें वहाँ बाप ही बाप है। यह संस्कार लास्ट में समा जाते हैं जो फिर भक्ति में जहाँ देखते वहाँ 'तू ही तू' कह पुकारते हैं। लास्ट में आप सबके चेहरे दर्पण का कार्य करेंगे। जैसे आजकल मन्दिरों में ऐसे दर्पण रखते हैं जिसमें एक ही सूरत अनेक रूपों में दिखाई देती है। ऐसे आप सबके चेहरे चारों ओर बाप को प्रत्यक्ष दिखाने के निमित्त बनेंगे। और भक्त कहेंगे जहाँ देखते तू ही तू। सारे कल्प के संस्कार तो यहाँ ही भरते हैं। तो भक्त इसी

संस्कार स□मुक्ति को प्राप्त करेंग॥ इसलिए द्वापर की आत्माओं में या मुक्ति पान□का संस्कार या तू ही तू क□ संस्कार ज्यादा इमर्ज रहत□हैं तो अपन□वा बाप क□ भक्त भी अभी ही निश्चित होत□हैं। राजधानी भी अभी बनती तो भक्त भी अभी बनत॥ तो भक्तों को जगान□जाती हो वा बच्चों स□मिलन□क□ लिए जाती हो? चैक करना कि इस चक्कर में म□□भक्त कितन□बन□और बाप क□ बच्च□कितन□बन॥ दोनों का विशष पार्ट है। भक्तों का भी आधा कल्प का पार्ट है और बच्चों का भी आधा कल्प का अधिकार है। भक्त भी अभी दिखाई देंग□या अन्त में? जो नौधा भक्ति करन□वाल□नम्बरवन 'भक्त माला' क□ मणक□ होंग□वह भी प्रत्यक्ष यहाँ ही होन□हैं। विजय माला भी और भक्त माला भी। क्योंकि संस्कार भरन□का समय 'संगमयुग' ही है। भक्त अन्त में पुकारत□रह जायेंग□ह□भगवान, हमें भी कुछ द□दो। यह संस्कार भी यहाँ स□भरेंग□और बच्च□साथ का अनुभव करेंग॥ अच्छा।

==========

QUIZ QUESTIONS

==========

प्रश्न 1 :- लास्ट स्टज वालों बच्चों प्रति बाबा क्या कह रह□है?

प्रश्न 2 :- ब्राह्मणों की अलौकिकता कहाँ तक दिखाई दी है? इस संदर्भ म□ बाबा क्या समझानी द□रह□है?

प्रश्न 3 :- बाप क□ सिरताज कौन स□ब्राह्मण बच्चें बन सकत□है?

प्रश्न 4 :- बाबा महारथियों प्रति क्या समझानी द रह है?

प्रश्न 5 :- बाबा बच्चों क भक्तों का पार्ट क संबंध म क्या बता रह है?

FILL IN THE BLANKS:-

{ सिरताज, बनत सुनत साथ-साथ, नैचुरल, मर्यादा पुरूषोत्तम, श्रेष्ठ }

1 एक-एक बोल जैस जैस _____ जा रह हैं, वैस वैस _____ जा रह हैं।

2 सदा अपन ब्राह्मण कुल की मर्यादा क लकीर क अन्दर रहन वाल ‘_____’ होत है।

3 सुनन सुनान और समान बनन वाल अभी-अभी स्वरूप स दिखान वाल सदा _____ कहलात है।

4 सदा बाप क सर्व प्राप्तियों क सहार में रहन वाल _____ आत्मा कहलात है।

5 जैस मधुबन में भी एक कमर स दूसर कमर में जाओ तो यह नहीं कहेंग हम जा रह हैं, छुट्टी लेवें, नहीं। _____ जाना आना चलता रहता है, क्योंकि _____ है ना।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करें:-

1 :- समान का स्वरुप है माया समान बनना।

2 :- लास्ट स्टेज है सुनना और सुनाना।

3 :- सुनना और सुनाना तो कामन बात है।

4 :- अब सेल्स रियलाइजेशन कोर्स चल रहा है।

5 :- जो सदा साथ रहता, स्थान में भी और स्थिति में भी, तो उसके लिए जाना नहीं कहेंगे।

==

QUIZ ANSWERS

==

प्रश्न 1 :- लास्ट स्टेज वालों बच्चों प्रति बाबा क्या कह रहे है?

उत्तर 1 :- लास्ट स्टेज वालों बच्चों प्रति बाबा कह रहे है कि-

❶ लास्ट स्टेज वालों का लक्ष्य और बोल, स्वरूप द्वारा स्पष्ट दिखाई देगा। जैसे पहला पाठ आत्मा का सुनते हो और सुनाते हो। लास्ट स्टेज वाली आत्मा सिर्फ शब्द सुनेंगी, सुनावेंगी नहीं। लेकिन साथ-साथ स्वरूप में स्थित होगी। इसको कहते हैं बाप समान बनना।

❷ स्वयं का वा बाप का स्वरूप व गुण वा कर्त्तव्य, सिर्फ सुनायेंग नहीं लेकिन हर गुण और कर्त्तव्य अपन स्वरूप द्वारा अनुभव करायेंग। जैस बाप अनुभवी मूर्त है, सिर्फ सुनान वाल नहीं हैं। तो ऐस फॉलो फादर करना है। जैस साकार में बाप को देखा, सुनान क साथ कर्म में, स्वरूप में करक दिखाया। सुनना, सुनाना और स्वरूप बन दिखाना - तीनों ही साथसाथ चला।

प्रश्न 2 :- ब्राह्मणों की अलौकिकता कहाँ तक दिखाई देती है? इस संदर्भ म बाबा क्या समझानी द रह है?

उत्तर 2 :- ब्राह्मणों की अलौकिकता क संदर्भ म बाबा समझा रह है कि-

❶ जैस बाप क महावाक्य हैं कि 'मेरा जन्म और कर्म प्राकृत मनुष्यों सदृश्य नहीं, लेकिन दिव्य और अलौकिक है।' बाप-दादा क साथ-साथ आप ब्राह्मणों का जन्म भी साधारण नहीं, दिव्य और अलौकिक है। जैसा जन्म, जैसा दिव्य नाम वैसा ही दिव्य अलौकिक काम है।

❷ जैस हरेक लौकिक कुल की मर्यादा की भी लकीर होती है। ऐस ब्राह्मण कुल की मर्यादाओं की लकीर क अन्दर रहत है? मर्यादाओं की लकीर, संकल्प में भी किसी आकर्षण वश उल्लंघन तो नहीं करत हैं। अर्थात् लकीर स बाहर तो नहीं जात हैं। शूद्रपन क स्वभाव वा संस्कार की

स्मृति आना अर्थात् अछूत बनना। अर्थात ब्राह्मण परिवार स□अपन□आप ही अपन□को किनार□करना।

प्रश्न 3 :- बाप क□ सिरताज कौन स□ब्राह्मण बच्चें बन सकत□है?

उत्तर 3 :- बाबा कह रह□है कि-

❶ ब्राह्मणों को स्वयं बाप भिन्न-भिन्न 'श्रेष्ठ टाईटल' स□पुकारत□हैं। जानत□हो ना? आपक□ कितन□टाईटल हैं? ब्राह्मण अर्थात् पुकारना बन्द। ब्राह्मण अर्थात् सिरताज।

❷ कभी भी प्रकृति क□ वा माया क□ मोहताज नहीं। तो ऐस□सिरताज बन□हो? माया आ जाती है अर्थात् मोहताज बनना। पुरान□संस्कार वश हो जात□हैं, स्वभाव वश हो जात□हैं, यह है मोहताज पन। ऐसा मोहताज बाप क□ सिरताज नहीं बन सकता। विश्व क□ राज्य क□ ताजधारी नहीं बन सकता, बाप क□ सिरताज बनन□वाल□स्वप्न में भी मोहताज नहीं बन सकत□

प्रश्न 4 :- बाबा महारथियों प्रति क्या समझानी द□रह□है?

उत्तर 4 :- बाबा महारथियों प्रति समझा रह□है कि-

❶ महारथी अर्थात् बाप समान। महारथियों का हर कदम में पद्मों की कमाई तो कामन बात है, लेकिन हर कदम में अनेक आत्माओं को पद्मापति बनाने का वरदान भरा हुआ है।

❷ महारथी कहेंगे हम जाते हैं? नहीं, लेकिन साथ जाते हैं। महारथियों की सर्विस, नैनों द्वारा बाप से प्राप्त हुए वरदान अनेकों को प्राप्ति कराना अर्थात् अपने द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करना है।

❸ आप को देखते-देखते बाप की स्मृति स्वत: आ जाए। हरेक के दिल से निकले कि कमाल है बनाने वाले की! तो बाप प्रत्यक्ष हो जाएगा। बाप, आप द्वारा प्रत्यक्ष दिखाई देगा और आप गुप्त हो, जायेंगे। अभी आप प्रत्यक्ष हो, बाप गुप्त है, फिर हरेक दिल से बाप की प्रत्यक्षता के गुणगान् करते हुए सुनेंगे। आप दिखाई नहीं देंगे, लेकिन जहाँ भी देखेंगे तो बाप दिखाई देगा। इसी कारण जहाँ भी देखें वहाँ बाप ही बाप है।

❹ यह संस्कार लास्ट में समा जाते हैं जो फिर भक्ति में जहाँ देखते वहाँ 'तू ही तू' कह पुकारते हैं। लास्ट में आप सबके चेहरे दर्पण का कार्य करेंगे। जैसे आजकल मन्दिरों में ऐसे दर्पण रखते हैं जिसमें एक ही सूरत अनेक रूपों में दिखाई देती है। ऐसे आप सबके चेहरे चारों ओर बाप को प्रत्यक्ष दिखाने के निमित्त बनेंगे। और भक्त कहेंगे जहाँ देखते तू ही तू।

❺ सार□कल्प क□ संस्कार तो यहाँ ही भरत□हैं। तो भक्त इसी संस्कार स□मुक्ति को प्राप्त करेंग॥ इसलिए द्वापर की आत्माओं में या मुक्ति पान□का संस्कार या तू ही तू क□ संस्कार ज्यादा इमर्ज रहत□हैं तो अपन□वा बाप क□ भक्त भी अभी ही निश्चित होत□हैं।

प्रश्न 5 :- बाबा बच्चों क□ भक्तों का पार्ट क□ संबंध म□क्या बता रह□है?

उत्तर 5 :- बाबा बच्चों क□ भक्तों का पार्ट क□ संबंध म□बता रह□है कि-

❶ राजधानी भी अभी बनती तो भक्त भी अभी बनत॥ तो भक्तों को जगान□जाती हो वा बच्चों स□मिलन□क□ लिए जाती हो? चैक करना कि इस चक्कर में म॥□भक्त कितन□बन□और बाप क□ बच्च□कितन□बन॥

❷ दोनों का विशष्ट पार्ट है। भक्तों का भी आधा कल्प का पार्ट है और बच्चों का भी आधा कल्प का अधिकार है। भक्त भी अभी दिखाई देंग□या अन्त में? जो नौधा भक्ति करन□वाल□नम्बरवन 'भक्त माला' क□ मणक□ होंग□वह भी प्रत्यक्ष यहाँ ही होन□हैं।

❸ विजय माला भी और भक्त माला भी। क्योंकि संस्कार भरन□का समय 'संगमयुग' ही है। भक्त अन्त में पुकारत□रह जायेंग□ह□भगवान, हमें भी कुछ द□दो। यह संस्कार भी यहाँ स□भरेंग□और बच्च□साथ का अनुभव करेंग॥

FILL IN THE BLANKS:-

{ सिरताज, बनत, सुनत, साथ-साथ, नैचुरल, मर्यादा पुरूषोत्तम, श्रेष्ठ }

1 एक-एक बोल जैसे जैसे _____ जा रहे हैं, वैसे वैसे _____ जा रहे हैं।

सुनते / बनते

2 सदा अपने ब्राह्मण कुल की मर्यादा के लकीर के अन्दर रहने वाले '_____' होते है।

मर्यादा / पुरूषोत्तम

3 सुनने, सुनाने और समान बनने वाले, अभी-अभी स्वरूप से दिखाने वाले सदा _____ कहलाते है।

सिरताज

4 सदा बाप के सर्व प्राप्तियों के सहारे में रहने वाले _____ आत्मा कहलाते है।

श्रेष्ठ

5 जैस□मधुबन में भी एक कमर□स□दूसर□कमर□में जाओ तो यह नहीं कहेंग□हम जा रह□हैं, छुट्टी लव, नहीं। _____ जाना आना चलता रहता है, क्योंकि _____ है ना।

नैचुरल / साथ-साथ

सही गलत वाक्यो को चिन्हित कर□- 【✔】 【✖】

1 :- समान□का स्वरुप है माया समान बनना। 【✖】

समान□का स्वरुप है बाप समान बनना।

2 :- लास्ट स्टज है सुनना और सुनाना। 【✖】

लास्ट स्टज है सुनना और बनना।

3 :- सुनना और सुनाना तो कामन बात है। 【✔】

4 :- अब सक्स रियलाइजशन कोर्स चल रहा है। 【✔】

5 :- जो सदा साथ रहता, स्थान म□भी और स्थिति म□भी, तो उसक□ लिए जाना नहीं कहेंग□ 【✔】